ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v6.i5.2018.1428

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

गाँधी–दर्शन की प्रासंगिकता

डॉ0 श्रीमती हीना परवीन [1]
[1] व्याख्याता, हिंदी विभाग, रहमानिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज माउ, यूपी, भारत

सारांश
गाँधी–दर्शन के आधार तत्व सत्य, अहिंसा और प्रेम हैं और इसी आधार पर राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक विचारों की बेल फल–फूल रही है। यही तीन तत्व प्रकाश, जल और वायु की भाँति सम्पूर्ण गाँधी–दर्शन को पोषित व पल्लवित कर रहे हैं। प्रस्तुत आलेख द्वारा हम वर्तमान समाज में गाँधी–दर्शन की अनिवार्यता तथा प्रासंगिकता अवलोकन करेंगे।

मुख्य शब्द – राजनीतिक क्षेत्र में, सामाजिक क्षेत्र में, आर्थिक क्षेत्र में, सांस्कृतिक क्षेत्र में– मद्य–निषेध शिक्षा, मानव अधिकार के क्षेत्र में, विश्व शान्ति के क्षेत्र में।

Cite This Article: डॉ0 श्रीमती हीना परवीन. (2018). "गाँधी–दर्शन की प्रासंगिकता." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 6(5), 73-77. 10.29121/granthaalayah.v6.i5.2018.1428.

प्रस्तावना

गाँधी के विचार केवल गाँधी युग तक ही प्रासंगिक नहीं थे अपितु उनके विचारों की उज्जवल छाया से मानव–समाज युगों–युगों तक प्रकाशित होता रहेगा। पिछले 70 वर्षों में मानव–समाज में अनेक प्रकार की विषमताएँ हमारे सामने आयी हैं। समाज में हिंसा, लूट–पाट, हत्या, बलात्कार जैसी आपराधिक प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं। आज का मानव इतना स्वार्थी हो गया है कि वह पराये तो क्या अपने सम्बन्धियों की भावनाओं को भी ठेस पहुँचाने में संकोच नहीं करता। धन की पिपासा शान्त होने का नाम ही नहीं लेती। जितना मिलता है वह कम प्रतीत होता है और अधिक की चाह बढ़ती जा रही है। धन का मूल्य बढ़ रहा है और मानव जीवन का मूल्य घटता जा रहा है। मानव समाज में मानवीय भावनाओं का निरन्तर ह्रास हो रहा है जो स्वयं मानवीय हित में नहीं है।

हमारी युवा पीढ़ी पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण कर रही है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति की आभा दिनों–दिन क्षीण होती जा रही है। यह पाश्चात्य सभ्यता के बढ़ते प्रभाव का ही परिणाम है। किसी भी देश के युवा उस देश के रीढ़ होते हैं, उनका पतन कई अर्थों में राष्ट्रीय पतन कहलाता है। सब जगह अंग्रेजी का बोल–बाला है, अंग्रजी बोलना प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जा रहा है और हिन्दी के साथ सौतेला व्यवहार किया जा रहा है।

आज जबकि विश्व तीसरे विश्व युद्ध की कगार पर खड़ा है और सभी शान्ति के उपाय निरर्थक सिद्ध हो चुके हैं, तो गाँधी–दर्शन की प्रासंगिकता और भी बढ़ गयी है। गाँधी विचारों का आलोक ही हमें उचित मार्ग–दर्शन और प्रेरणा दे सकता है।

राजनीतिक क्षेत्र मेंः— वर्तमान राजनीति में भ्रष्टाचार, अपराध और अनैतिकता का साम्राज्य चारों ओर व्याप्त है। वर्तमान में नेताओं की छवि धूमिल हुई है और सामान्य जनता का मोह भंग हुआ है। गाँधी जी की कथनी—करनी तथा विचारों में पारदर्शिता थी। जबकि आज के नेता केवल सत्ता और वोटों की ही राजनीति करना जानते हैं, उनकी कथनी—करनी और विचारों में कोई समानता नहीं है। आज के नेताओं ने राजनीति का अर्थ ही बदल दिया है, 'राज करने की नीति' इसके लिये वे साम, दाम, दण्ड भेद सभी का प्रयोग करते हैं। गाँधी जी के बाद सम्भवतः ऐसा कोई नेता नहीं है जिसकी एक पुकार पर जनता उसके पीछे चल दे।

आज के नेता स्वार्थ लिप्सा में लिप्त हैं। राजनीति का अपराधीकरण आज कोई नई बात नहीं है। सभी प्रमुख पार्टियाँ ऐसा न करने के खिलाफ जरूर हैं परन्तु अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष रूप से वे चुनाव के समय टिकट अपराधी प्रवृत्ति के लोगों को अवश्य देती हैं। चुनाव के समय बिहार तथा अन्य स्थानों पर उभरती हिंसा तथा बूथों को बन्दूकों के बल पर लूट लेना, लोगों के स्वतन्त्र चुनाव अधिकारी का हनन साधारण बात हो गयी है। सभी पार्टियाँ इसको रोकना चाहती हैं किन्तु इसके लिये ठोस नियम तथा इसके पालन की आवश्यकता है। सत्ता में आने के लिए सांसदों की खरीद—फरोख्त बड़े पैमाने पर हो रही है। ऐसे समय में गाँधी जी के विचार ही हमें उचित दिशा—निर्देश दे सकते हैं। आज विश्व स्तर पर भी महात्मा गाँधी के विचार अधिक प्रासंगिक है।

सामाजिक क्षेत्र मेंः— महात्मा गाँधी नारी स्वतन्त्रता के समर्थक थे। सम्भवतः इसीलिए उन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में नारी सहभागिता को महत्वपूर्ण माना और उन्हें घर की चार दीवारी से निकालकर उपयुक्त वातावरण प्रदान किया। उन्होंने हमारे देश की नारी शक्ति को स्वातन्त्रता आंदोलन की शक्ति बनाया और उस शक्ति का उपयोग सामाजिक सुधारों को क्रियान्वित करने में किया।

कुछ हद तक आज हमने समाज और परिवार में स्त्री—पुरूष की समानता को स्वीकारा है जिसके कारण आज की नारी पुरूष के साथ कन्धें से कन्धा मिलाकर प्रत्येक क्षेत्र में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही है परन्तु अब भी मानसिक रूप से गाँधी जी के विचारों को हम अपने जीवन में लागू नहीं कर पाये हैं। जिसके कारण अधिकांश परिवारों में अभी भी पुत्र और पुत्री के भेद के कारण लड़कियों को शिक्षा के अधिकार से वंचित कर उन्हें कर्तव्य व सेवा का पाठ पढ़ाकर परम्परागत तथा रूढ़िगत श्रंखलाओं में बाँध दिया जाता है, जो सर्वथा अनुचित है।

आज भारत में साम्प्रदायिकता की आग चारों ओर फैली हुई है, इसके लिए भी नेताओं की स्वार्थपरता, भड़काऊ भाषण ही जिम्मेदार है। एक भीड़ को धार्मिक उन्माद का रूप दे देना आज अत्यन्त सरल हो गया है। मानव संवेदना तथा भावना शून्य हो गया है जिसके कारण एक वर्ग को दूसरे के प्रति भड़काना आसान हो गया है।

गाँधी जी ने कहा था, "मैं ऐसे भारत के निर्माण के लिए सतत् प्रयत्नशील रहूँगा जिसमें सभी सम्प्रदायों का मेल—जोल होगा। उसमें स्त्रियों को वही अधिकार दिये जायेंगे जो पुरूषों को प्राप्त हैं।" वर्तमान में भारतीय संविधान और भारत सरकार की नीतियाँ स्वयं ही गाँधी जी के विचारों की प्रमाणिकता को सिद्ध कर रही हैं कि वे आज के सन्दर्भ में कितने प्रासंगिक हैं।

आर्थिक क्षेत्र मेंः— गाँधी के विचार इस दृष्टि से प्रासंगिक हैं कि इसने मानवीय भावनाओं का यन्त्रीकरण कर दिया है। मशीनों के कारण व्यक्ति भावनाओं और अनुभूतियों, संवेदना से विहीन होता जा रहा है। दिनों—दिन भारत में बेरोजगारी का संकट बढ़ता ही जा रहा है। मशीन उपयुक्त हैं जहाँ काम अधिक है परन्तु भारत एक ऐसा देश है जहाँ जनसंख्या अधिक और कार्य के अवसर कम।

शिक्षा रोजगारपरक न होने के कारण आज का युवा वर्ग शिक्षा समाप्ति के पश्चात् रोजगार न मिलने पर अपने भविष्य के प्रति चिन्तित व दिगभ्रमित हैं, इसे जहाँ एक ओर युवाा शक्ति का नाश हो रहा है वहीं अपराधों की संख्या में निरन्तर वृद्धि भी इसी का परिणाम है, अतः भारतीय अर्थ व्यवस्था में बापू के विचार तर्क संगत हैं।

वर्तमान में हमारा देश आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया से गुजर रहा है। सरकार लघु उद्योग, कुटीर उद्योग तथा दस्तकारी को प्रात्साहित करके समस्या का आंशिक समाधान कर सकती है। जब तक आर्थिक उत्पादन और वितरण सामाजिक कल्याण को ध्यान में रखकर नहीं किया जायेगा तब तक आर्थिक विकास राष्ट्र के सम्पूर्ण विकास का पर्याय नहीं हो सकता।

सांस्कृतिक क्षेत्र मेंः— आज मद्य—निषेध के क्षेत्र में आन्ध्र प्रदेश, गुजरात, राजस्थान व देश के अन्य क्षेत्रों में जो अभियान चलाया जा रहा है, व गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता को सिद्ध कर रहा है। आज घर की स्त्री स्वयं इस अभियान में सक्रिया भूमिका निभाकर न केवल अपने परिवार व समाज का हित कर रही है अपितु देश के विकास में भी योगदान दे रही है। सरकार को भी पूर्ण रूप से इस क्षेत्र में योगदान देकर कार्यक्रम को सफल बनाने की दिशा में कार्यरत होना चाहिए।

आन्ध्र प्रदेश की महिलाओं ने कुछ साल पहले शराब के विरूद्ध एक जन आन्दोलन छेड़ा था, जिससे प्रेरणा प्राप्त कर वहाँ की सरकार ने अपने यहां शराब बन्दी लागू की। सन् 1996 में हरियाणा में भी ठीक यही स्थिति उत्पन्न हुई, जब चुनाव में एक राजनीतिक दल ने शराब बन्दी को मुख्य आधार बनाया, चुनाव में विजय प्राप्त कर मुख्यमंत्री श्री बंसी लाल ने राज्य में शराब पर प्रतिबंध लगा दिया किन्तु आज सरकार की मद्यपान की नीति और राजस्व को आधार मानकर की जाने वाली नीलामी और धड़ल्लें से खुल रही शराब की दुकानें गाँधी जी के मद्यपान विरोधी विचारों और आन्दोलन का परिहास करते दिखायी दे रहे हैं।

शिक्षाः— हमारे देश में अभी तक कोई भी ऐसा प्रयास नहीं किया जा रहा है कि हमारी अपनी भाषाओं में उच्च शिक्षा प्रदान की जाये। यह हमारी शिक्षा की सबसे बड़ी असफलता है। रूस ने बिना अंग्रेजी के विज्ञान में इतनी उन्नति की है। स्वतन्त्रता के 70 वर्षों बाद भी हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है, हिन्दी के साथ अपने ही देश में परायों जैसा व्यवहार हो रहा है यह कहाँ तक उचित है? इसी विषय पर प्रसिद्ध विद्वान विष्णु कान्त शास्त्री का कहना है, “अंग्रेजी जीत रही है और भारतीय भाषाएँ हार रही हैं। अंग्रेजी भाषा हमारे लिए प्रतिष्ठा का विषय बन गई हैं। कुकुरमुत्तों की तरह उगते अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों को रोकना होगा।”

गाँधी जी द्वारा निर्धारित बेसिक शिक्षा की नीति को यदि आज स्वीकार किया जाये तो एक ओर श्रम के प्रति लोगों के मन में आदर का भाव ही नहीं जागृत हो सकेगा बल्कि बेरोजगारी की समस्या का भी कुछ अंश तक समाधान हो सकेगा।

मानव—अधिकार के क्षेत्र मेंः— वर्तमान समय में सरकार ने इस ओर कई सकारात्मक कदम उठाये हैं। सभी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा पूर्णतः निशुल्क दी जा रही है और अगर वे आगे पढ़ने में रूचि रखते हैं तो कई सरकारी, गैर—सरकारी संस्थाएँ उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति देती है, जिससे वे बिना किसी व्यवधान के अपने सपनों को पूरा कर सकें। बालश्रम को रोकने के लिए संविधान में 14 वर्ष से कम आयु के बालकों से काम लेने पर दण्ड का प्रावधान है। श्रमिकों के लिए कई कानून बनाए गए हैं, उनके काम के घण्टों में कटौती, पूरी मजदूरी बोनस के साथ ही काम करते हुए आकस्मिक दुर्घटना होने पर सरकार कम्पनी से उन्हें पूरा मुआवजा दिलवाती है जो उनका हक है।

सरकार किसानों को उन्नत बीजों की किस्में तथा आधुनिक उपकरणों के लिए रिआयती दरों पर ऋण उपलब्ध कराती है जिससे उनकी फसल अच्छी हो और उन्हें अपनी फसल के पूरे पैसे मिलें। महिला अधिकारों तथा अल्पसंख्यकों के अधिकारों लिए सरकार ने संविधान में अनेक संशोधन किए हैं।

इन सब कानूनों के होते हुए भी सरकार की उदासीनता के कारण कोई भी वर्ग अपने अधिकारों को पूरा–पूरा लाभ नहीं पा रहा है, इसके लिए सरकार को कानून का कठोरता के साथ पालन करना चाहिए।

विश्व शान्ति के क्षेत्र में:– गाँधी–दर्शन आज अनेक समस्याओं के समाधान में सबसे अधिक कारगर और सहायक सिद्ध हो रहा है। आज जबकि विश्व तीसरे विश्व युद्ध की कगार पर खड़ा है, परमाणु तथा जैविक हथियारों का बढ़ता प्रयोग मानवता के लिए खतरा बन गया है। विज्ञान के प्रयोग ने हमारे जीवन को सुखमय अवश्य बनाया है परन्तु इसके ऋणात्मक प्रभाव को भी नकारा नहीं जा सकता है। यंत्रों के अत्यधिक प्रयोग के कारण सम्भवतः मानवीय भावनाओं का भी यंत्रीकरण हो गया है, वे समाप्ति की ओर अग्रसर है। मानव समाज भौतिक सुखों के पीछे भाग रहा है और आत्मिक सुखों की अनदेखी कर रहा है। यही कारण है कि उन्नति व प्रगति के कारण भी समाज में तथा मानव जीवन में रिक्तता का अनुभव हो रहा है। यह रिक्तता तभी पूर्ण हो सकती है, जब मानव स्वयं इस पर चिन्तन मनन करें और यह चिन्तन आशावादी आत्मिक सुखों की दिशा में होना चाहिए। गाँधी जी का मानना था केवल मस्तिष्क, केवल शरीर और केवल भौतिक दृष्टि से ही विकास करना पर्याप्त नहीं, इसके स्थान पर दया, प्रेम, सेवा और जीवन के नैतिक मूल्यों को महत्व देना होगा।

आज गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता सभी क्षेत्रों में बढ़ी है, "गाँधी जी स्वयं शान्ति के मूर्तिमान रूप थे। उनके लिए व्यक्ति के जीवन और सम्पूर्ण समाज के सन्दर्भ में अत्यधिक आनन्द शान्ति में निहित था।"

उनका मानना था कि शान्ति सीधे गाँव के व्यक्ति से प्रारम्भ हो, उनका अटल विश्वास था जिस राष्ट्र का आधार शान्ति है उसी के पास विश्व में शान्ति स्थापित करने की शक्ति हो सकती है। गाँधी जी द्वारा संचालित आंदोलन स्वयं ही विश्व शान्ति के क्षेत्र में एक बड़ा अभूतपूर्व कदम था। उन्होंने कभी भी ब्रिटिश साम्राज्य के लिए हिंसा के प्रयोग को उचित नहीं माना और हृदय परिवर्तन पर बल दिया। डी0जी0 तेन्दुलकर के शब्दों में 'गाँधी जी ब्रिटेन और भारत के बीच ही नहीं दुनिया के समस्त युद्धरत देशों के बीच शान्ति स्थापित करना चाहते थे'।

सार रूप में हम कह सकते हैं 70 वर्षों बाद भी गाँधी–दर्शन की प्रासंगिकता कई संदर्भों में पहले की अपेक्षा और भी अधिक बढ़ी हैं।

सहायक ग्रन्थ:–

1. 'समय : सन्दर्भ और गाँधी'– शंकर दयाल सिंह।
2. 'मेरे सपनों का भारत'– गाँधी जी।
3. 'मेरा समाजवाद'– गाँधी जी।
4. 'आज का भारत'– ए0के0 सिंह।
5. 'गाँधी व्यक्तित्व विचार और प्रभाव'– प्रस्तावना से उद्धृत (सम्पादक) काका कालेलकर।
6. 'गाँधी जी ने कहा था–शराब बन्दी करें'।
7. 'शिक्षा की समस्या'– गाँधी जी।
8. 'विश्व शान्ति और महात्मा गाँधी'– कुमारी निवेदिता शर्मा।
9. गाँधी जी कहा था'– मो0 क0 गाँधी।

पत्रिकाएँः–

1. 'समकालीन साहित्य समाचार'– अंक फरवरी 1999 सम्पादक सत्यव्रत।
2. 'भारतीय वांग्डमय (त्रैमासिक)'– अंक 3 (जु0 अ0 सि0) गाँधी जी।

*Corresponding author.
E-mail address: shams125@ gmail.com